18 जनवरी के लिए ब्रह्मा बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण स्थिति बनाने के लिए 18 कदम

(1) आप सभी ब्राह्मण आत्माओं ने जन्म लेते ही यह व्रत लिया है कि हमें बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनना है। जैसे सभी एवररेडी शब्द बोलते हो ऐसे सम्पन्न और सम्पूर्ण बनने में एवररेडी बनो, इसमें अलबेलापन न आये।

(2) ब्रह्मा बाप ने सम्पूर्ण बनने के लिए अपने सर्व खजाने आदि से अंतिम दिन तक सफल किये, इसका प्रत्यक्ष प्रमाण देखा -सम्पूर्ण फरिश्ता बन गया। तो लक्ष्य रखो मुझे बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनना ही है। कुछ भी पुरूषार्थ करना पड़े लेकिन निश्चित है कि बाप समान बनना ही है।

(3) बाप समान बनने के लिए बाप को फालो करते चलो। सोचो, ब्रह्मा बाप सम्पूर्ण कैसे बने ? उनकी क्या विशेषता रही ? सम्पूर्णता का विशेष आधार क्या रहा ? ब्रह्मा बाप ने अपना हर समय, श्वांस-श्वांस, सेकण्ड-सेकण्ड सफल किया। तो बाप समान बनने के लिए लक्ष्य रखो कि सफल करना है और सफलतामूर्त बनना है।

(4) सम्पन्नता वा सम्पूर्णता को प्राप्त करने के लिए देह के अभिमान से सम्पूर्ण समर्पण होना है। देह का अभिमान बिल्कुल ही टूट जाए, तब कहा जायेगा सर्व समर्पणमय जीवन, ऐसे जो सर्व त्यागी, सर्व समर्पण जीवन वाले हैं उनकी ही सम्पूर्ण अवस्था गाई जाती है और जब सम्पूर्ण बन जायेंगे तब साथ जायेंगे।

(5) जैसे हैं, जो भी परिस्थितियां सामने हैं उन्हीं हालातों में रहते इस ही शरीर में हमको सम्पूर्ण बनना है। आपका संगमयुगी सम्पूर्ण रूप शक्तियों और पाण्डवों के रूप में गाया हुआ है। जब इस स्वरूप में स्थित होंगे तब मालूम पड़ेगा कि हमारे भक्त कौन से हैं और प्रजा कौनसी है। जो प्रजा होगी वह नजदीक आयेंगे और जो भक्त होंगे वह पिछाड़ी में चरणों पर झुकेंगे।

(6) अंतिम सम्पूर्ण स्थिति को प्राप्त करने के लिए स्वयं को मेहमान समझकर चलो। जो अपने को मेहमान समझते हैं वह व्यक्त में होते हुए भी अव्यक्त स्थिति में रहते हैं उनका किसके साथ भी लगाव नहीं होता है। हम इस शरीर में, इस पुरानी दुनिया में मेहमान हैं। सिर्फ थोड़े समय

के लिए यह शरीर काम में लाना है।

(7) पाण्डवों का गायन है कि गल कर खत्म हो गये। पहाड़ों पर नहीं लेकिन ऊंची स्थिति में गल कर अपने निचाई से बिल्कुल ऊपर जो अव्यक्त स्थिति है, उसमें गल गये अर्थात् उस अव्यक्त स्थिति में सम्पूर्णता को प्राप्त हुए, यह आप पाण्डवों का ही यादगार है।

(8) ''बिन्दु और सिन्धु'' यह दो शब्द ही अगर याद रखो तो सम्पूर्णता सहज आ सकती है। एक बिन्दु की याद और एकरस अवस्था, एक की ही मत और एक के ही कर्तव्य में मददगार। सिर्फ बिन्दु और एक, उसके आगे विस्तार में जाने की दरकार नहीं। विस्तार में जाना है तो सिर्फ सर्विस प्रति। उसके आगे अपनी बुद्धि को चलाने की आवश्यकता नहीं है।

(9) स्नेह और शक्ति जब इन दोनों का मिलन हो जाता है तो अवस्था अति न्यारी और अति प्यारी होती है, जिसके लिए स्नेह है उसके समान बनना है, यही स्नेह का सबूत है। लेकिन सिर्फ स्नेह रखने से सम्पूर्ण नहीं बनेंगे, स्नेह के साथ-साथ शक्ति भी होगी तो खुद सम्पूर्ण बन औरों को भी सम्पूर्ण बनायेंगे।

(10) संगमयुग की सम्पूर्ण स्टेज का पिक्चर है फरिश्ता। फरिश्ता बिल्कुल हल्का होता है और जिसमें हल्कापन है वह हर परिस्थिति में अपनी श्रेष्ठ स्थिति बना लेता है। फरिश्ते संकल्पों में भी हल्के, वाणी में भी हल्के और कर्म करने में भी हल्के और सम्बन्ध में भी हल्के रहेंगे और जो हल्के होंगे वो एक सेकण्ड में कोई भी आत्मा के संस्कारों को परख सकेंगे। जब यह सभी गुण हर कर्म में प्रत्यक्ष दिखाई दें तब समझो अब सम्पूर्ण स्टेज नजदीक है।

(11) जितना सम्पूर्ण स्टेज समीप आती जायेगी उतना दूसरों के संकल्पों को रीड कर सकेंगे। इसके लिए अपने संकल्पों के ऊपर फुल ब्रेक चाहिए। जो अपने संकल्पों को समेट सकते हैं वही दूसरों के संकल्पों को समझ सकते हैं। तो संकल्पों का बिस्तर बंद करते चलो।

(12) जब स्थूल और सूक्ष्म दोनों का अंतर समाप्त हो जायेगा तब सम्पूर्ण स्थिति के समीप आयेंगे। यह व्यक्त देश अव्यक्त देश बन जायेगा। जैसे बापदादा व्यक्त में आते हैं तो भी अव्यक्त रूप के अव्यक्त देश की अव्यक्ति प्रवाह में रहते हैं। वही बच्चों को अनुभव कराते हैं तो आप भी अपने अव्यक्त स्थिति का अनुभव औरों को कराओ।

(13) इस समय को अमूल्य समझकर प्रयोग करो तब सम्पूर्ण बन सकेंगे। सम्पूर्ण होने में

व्यर्थ संकल्प जो रूकावट डालते हैं इससे बचने के लिए कभी अंदर वा बाहर की रेस्ट न लो। रेस्ट में नहीं होंगे तो वेस्ट नहीं जायेगा। दूसरा अपने को सदैव गेस्ट समझो।

(14) व्यर्थ संकल्प वा विकल्प जो चलते हैं उसका कारण एक ही शब्द बुद्धि में आता है कि यह क्यों हुआ, क्यों से व्यर्थ संकल्पों की क्यू शुरू हो जाती है। इस क्यू के समाप्ति के बाद ही सम्पूर्णता आयेगी फिर वह क्यू लगेगी। जब क्यों शब्द खत्म होगा तब ड्रामा की भावी पर एकरस स्थेरियम रहेंगे।

(15) एक दो की बातों स्वीकार करना और सत्कार देना, जब यह दोनों ही बातें आ जाती हैं तो फिर सम्पूर्णता और सफलता दोनों ही समीप आ जाती हैं क्योंकि एक दो को सत्कार देना ही भविष्य का अधिकार लेना है।

(16) मैं और मेरा, तू और तेरा इन चार शब्दों ने ही सम्पूर्णता से दूर किया है। इन चार शब्दों को सम्पूर्ण मिटाना है इसलिए हर बोल में सिर्फ बाबा बाबा निकले। मैं मेरा, तू तेरा समाप्त हो जाए।

(17) एक सेकण्ड में आवाज में आओ और एक सेकण्ड में आवाज से परे हो जाओ, अभी-अभी आवाज में, अभी-अभी आवाज से परे...जब यह अभ्यास सरल और सहज हो जायेगा तब समझो सम्पूर्णता समीप है।

(18) सम्पूर्ण स्टेज की निशानी है -उनका पुरूषार्थ सरल होगा। साकार रूप के संस्कार उपराम और साक्षी दृष्टा, यह साकार के सम्पूर्ण स्थिति के श्रेष्ठ लक्षण थे। तो इन संस्कारों में समानता लानी है। इन गुणों से सर्व के दिलों पर विजयी होंगे, जो संगम पर सर्व के दिलों पर विजयी बनता है वही भविष्य में विश्व महाराजन् बनता है।